नवभारत
| संस्थापक : स्व. रामगोपाल माहेश्वरी | प्रेरणा स्त्रोत : स्व. प्रफुल्ल माहेश्वरी |

मालेगांव : आतंकवाद का धर्म नहीं होता !

मालेगांव 2008 बम विस्फोट मामले में एनआईए अदालत द्वारा हालिया निर्णय ने भारतीय राजनीति और जांच एजेंसियों की कार्यप्रणाली पर कई अहम प्रश्न खड़े कर दिए हैं .अदालत ने सात में से चार आरोपियों को बरी कर दिया, और शेष तीन के विरुद्ध भी साक्ष्य गंभीर रूप से कमजोर बताए . यह फैसला न केवल 16 वर्षों से लंबित एक चर्चित मुकदमे का निष्कर्ष है, बल्कि उस 'हिंदू आतंकवाद' की राजनीतिक थ्योरी पर भी निर्णायक प्रहार करता है जिसे कभी प्रचारित किया था .

यह स्वीकार करना कठिन नहीं कि इस प्रकरण को लेकर शुरू से ही राजनीतिक रंग देने की कोशिश हुई . जांच एजेंसियों—चाहे वह महाराष्ट्र एटीएस रही हो या बाद में केस को संभालने वाली एनआईए—ने जिस तरह से कार्य किया, उसमें पेशेवर निष्पक्षता का अभाव दिखा . साध्वी प्रज्ञा, कर्नल पुरोहित जैसे आरोपियों को बिना ठोस साक्ष्यों के वर्षों तक जेल में रखा गया .यह न केवल उनके मौलिक अधिकारों का हनन था, बल्कि भारतीय न्याय प्रणाली की धीमी प्रक्रिया की भी एक त्रासद तस्वीर है .

इस फैसले के आलोक में हमें यह भी पुनर्विचार करना चाहिए कि क्या आतंकवाद को धर्म के चश्मे से देखना न्यायोचित है . मालेगांव केस में जिस 'भगवा आतंकवाद' की अवधारणा को राजनीतिक और अन्य गलियारों में गुंजाया गया, वह अब न्यायिक कसौटी पर खारिज हो चुकी है . इससे पहले 2007 के समझौता एक्सप्रेस विस्फोट केस में भी यही देखा गया था, जहां पाकिस्तानी आतंकी संलिप्तता की बजाय भारत के कुछ संगठनों को बिना पर्याप्त साक्ष्यों के फंसाने का प्रयास हुआ था . यह समय है जब हमारी जांच एजेंसियां राजनीतिक दबावों से मुक्त होकर, केवल साक्ष्य-आधारित और निष्पक्ष जांच की दिशा में स्वयं को पुनर्गठित करें . आतंकवाद, किसी भी धर्म, संप्रदाय या विचारधारा से ऊपर एक अपराध है, जिसे राजनीतिक हथियार न बनाया जाए . अंततः मालेगांव केस केवल एक न्यायिक निर्णय नहीं, बल्कि भारत के लोकतंत्र के लिए एक चेतावनी है कि राजनीतिक एजेंडा और जांच तंत्र की निष्पक्षता के बीच संतुलन बिगड़ते ही न्याय की आत्मा घायल होती है . हमें उस संतुलन की पुनर्स्थापना करनी होगी—अब, और बिना देर किए .बहरहाल, मालेगांव बम विस्फोट और उससे जुड़े अभियुक्तों की रिहाई ने भारतीय न्याय प्रणाली में निष्पक्षता और विवेक का प्रमाण तो प्रस्तुत किया है, लेकिन साथ ही यह भी उजागर किया है कि राजनीतिक पूर्वग्रहों से प्रेरित जांच किस हद तक निर्दोष नागरिकों का जीवन बर्बाद कर सकती है . इस थ्योरी के चलते न केवल निर्दोषों को वर्षों तक जेल में रहना पड़ा, बल्कि राष्ट्रवादी संगठनों और विचारधाराओं को आतंकवाद से जोड़ने का असफल प्रयास किया गया . इससे समाज में अविश्वास, ध्रुवीकरण को बढ़ावा मिला .

दरअसल,भारत जैसे विविधताओं वाले लोकतंत्र में आतंकवाद जैसे संवेदनशील मुद्दे को किसी धर्म, रंग या विचारधारा से जोड़ना न केवल खतरनाक है बल्कि राष्ट्रीय सुरक्षा और सामाजिक समरसता के लिए विनाशकारी भी है . आतंकवाद के विरुद्ध लड़ाई केवल तभी सफल हो सकती है जब जांच, आरोप और सज़ा पूरी तरह से प्रमाण-आधारित, निष्पक्ष और राजनीतिक प्रभाव से मुक्त हो .मालेगांव मामले ने यह स्पष्ट कर दिया है कि राजनीतिक एजेंडा गढ़ने के लिए 'भगवा आतंकवाद' जैसा शब्दावली प्रयोग करना केवल तात्कालिक लाभ दे सकता है, दीर्घकालिक रूप से यह न्याय और सच्चाई की हार है .यह समय है जब देश एकजुट होकर आतंकवाद के विरुद्ध खड़ा हो, बिना किसी रंग, धर्म या पार्टी भेद के . जाहिर है आतंकवाद का धर्म नहीं होता .

प्रज्ञा ठाकुर- कर्नल पुरोहित को बरी किया जाना

वेद प्रकाश शर्मा

उन 17 वर्षों की क्षतिपूर्ति कौन करेगा?

यह सवाल न सिर्फ प्रज्ञा ठाकुर बल्कि हर उस व्यक्ति के लिए खड़ा होता है जिसे बिना दोष सिद्ध हुए दशकों तक जेल में रखा गया.

- क्या यह सिर्फ एक न्यायिक भूल थी ?
- क्या यह सोची-समझी साजिश थी ताकि एक विशेष राजनीतिक नैरेटिव हिंदू आतंकवाद को गढ़ा जा सके ? यही कारण है कि आज लोग पूछते हैं — वह समय कौन लौटाएगा ?

अंतत कोर्ट ने यह माना कि प्रज्ञा ठाकुर और कर्नल पुरोहित के खिलाफ पर्याप्त सबूत नहीं हैं, और इसलिए उन्हें मालेगांव विस्फोट मामले से मुक्त कर दिया गया. यह फैसला 17 वर्षों बाद आया, एक ऐसा कालखंड जिसमें किसी का संपूर्ण जीवन बदल सकता है — और बदल गया. प्रज्ञा ठाकुर की गिरफ्तारी, एनआईए की चार्जशीट, और न्यायिक प्रक्रिया को देखें तो शुरुआत से ही यह मामला एक राजनीतिक और वैचारिक प्रोजेक्ट जैसा दिखता है.

पुलिस की भूमिका और अमानवीयता- प्रज्ञा ठाकुर के बयान के अनुसार उन्हें शारीरिक और मानसिक रूप से प्रताड़ित किया गया — यह भारत की धारा 20, 21 और मानव अधिकारों के घोर उल्लंघन का मामला है. लेकिन असली सवाल है- क्या यह पुलिस एक संवैधानिक ढांचे का हिस्सा थी ? या किसी विचारधारा के अधीन काम कर रही थी ?

- जब पुलिस किसी आरोपित से बयान उगलवाने के लिए third degree torture का सहारा लेती है, तो यह कानून नहीं बल्कि राजनीतिक एजेंडे का उपकरण बन जाती है.
- स्वतंत्रता आंदोलन के दौरान अंग्रेज यही करते थे — और आज का लोकतांत्रिक भारत उस कॉलोनियल विरासत को क्यों ढो रहा है ?

हिंदू आतंकवाद का नैरेटिव — और राजनीतिक भूमिका- यह बात सबके सामने है कि हिंदू आतंकवाद का जुमला सबसे पहले 2008 के आसपास उछाला गया, और तब की सरकार ने इसे एक प्रचार अभियान की तरह प्रस्तुत किया. इसका मक़सद क्या था? एक समुदाय को मानसिक रूप से दोषी ठहराना और बहुसंख्यक समाज को अपराधबोध में धकेलना.

- जब सिमी, इंडियन मुजाहिदीन और लश्कर जैसे संगठनों की जांच हो रही थी, तभी अचानक दिशा मोड़ दी गई.
- यह भी देखा गया कि कुछ मीडिया संस्थान और नेताओं ने बिना जांच-पड़ताल किए प्रज्ञा ठाकुर को 'आतंकवादी साध्वी' तक कह दिया.

क्या पुलिसवाले हिंदू नहीं थे?- यह एक जटिल प्रश्न है. हां, प्रताड़ित करने वाले पुलिसकर्मी नाम से हिंदू हो सकते हैं, लेकिन विचारधारा से वे किसके थे ?

- क्या उन्होंने अपने विवेक और धर्मबुद्धि से काम किया या राजनीतिक निर्देशों के अनुसार ?
- अगर वे हिंदू होकर भी एक साध्वी के साथ ऐसा कर रहे थे, तो यह दिखाता है कि सत्ता के सामने जाति-धर्म गौण हो जाते हैं -भक्ति सिर्फ शासन की होती है, न कि धर्म की.

क्या यह सरकारों के संरक्षण के बिना संभव है?- बिलकुल नहीं.

- किसी भी पुलिस अधिकारी की यह हिम्मत नहीं हो सकती कि वह एक महिला साध्वी को नग्न कर पूछताछ करे, जब तक उसे राजनीतिक समर्थन न हो.
- उस दौर में गृहमंत्री कौन थे ? किस पार्टी की सरकार थी ? किन पत्रकारों ने किस शब्दावली का इस्तेमाल किया ? इस पूरे घटनाक्रम में एक राज्य प्रायोजित नैरेटिव को देखा जा सकता है, जो न्याय, मानवाधिकार और सत्य के बिल्कुल विरुद्ध था.

निष्कर्षच्यह मामला केवल एक व्यक्ति या विस्फोट से जुड़ा नहीं है — यह भारतीय लोकतंत्र, न्याय व्यवस्था और राज्यसत्ता की नीयत पर प्रश्नचिन्ह है.

- प्रज्ञा ठाकुर के 17 वर्ष कोई सामान्य वर्ष नहीं थे — वे भारत के लोकतंत्र की सबसे काली परछाई हैं.
- पुलिस का आचरण, मीडिया का चरित्र और राजनीतिक सत्ता का रवैया — तीनों को कठघरे में खड़ा करना चाहिए.
- और सबसे जरूरी बात — किसी भी व्यक्ति को आतंकवादी सिद्ध करने से पहले मीडिया ट्रायल और राजनीतिक बयानबाज़ी बंद होनी चाहिए.

महाकौशल की डायरी

भाजपाइयों को देना पड़ रही सफाई...?

अविनाश दीक्षित

अनुशासन का पाठ पढ़ाने वाले सत्तारूढ़ दल भाजपा के नेताओं को इन दिनों बार-बार सफाई देना पड़ रही है, जिससे पार्टी की छवि पर असर पड़ रहा है.

दरअसल महाकौशल के सबसे बड़े जिले जबलपुर में इसी हफ्ते दो ऐसे मामले उजागर हुए हैं जिनमें भाजपाई पदाधिकारी की संलिप्तता होना बताई जा रही है, हालांकि दोनों ही प्रकरणों में जांच अभी जारी है. पहला मामला पाटन विधानसभा क्षेत्र स्थित होटल किंग्सवे के विकास मैरिज हॉल का है, जहां हाई प्रोफाइल जुआ फड़ पुलिस की स्पेशल टीम ने पकड़ा, जिसकी भनक पाटन थाना पुलिस तक को नहीं लगी. यहां से जिन लोगों को हिरासत में लिया गया, वह ऊंची पहुंच रखने वाले बताए जा रहे हैं. इनमें से एक पंकज विश्वकर्मा भी है जिसे मंडल उपाध्यक्ष बताया जा रहा है. यद्यपि भाजयुमो जिला अध्यक्ष राजमणि बघेल ने साफ कहा कि पंकज विश्वकर्मा उनकी कार्यकारिणी का हिस्सा नहीं है. वहीं भाजपा ग्रामीण अध्यक्ष राजकुमार पटेल ने कहा कि वह संबंधित मंडल के अध्यक्ष से बात करने के बाद ही कुछ कह पाएंगे. इसी मामले में होटल संचालक सुमित व्यास जो कि फरार है, उसे भी भाजपा से जुड़ा बताया जा रहा है.

दूसरा मामला जबलपुर उत्तर विधानसभा क्षेत्र के विजय नगर स्थित स्पा सेंटर का है, जहां के संचालक आशुतोष पांडे पर वहीं कार्यरत रही महिला ने शोषण करने का आरोप लगाया और कहा कि उसके अलावा सेंटर में काम करने कर रहीं अन्य महिलाओं पर भी आशुतोष देह व्यापार करने का दबाव डालता है. महिला के मुताबिक आशुतोष खुद को भाजपा नेता, ब्राह्मण संगठन का पदाधिकारी, वकील बताता है. महिला के आरोप में कितनी सच्चाई है, इसका पता तो जांच के बाद ही पता चलेगा, मगर इस मामले में भाजपा जिला अध्यक्ष रत्नेश सोनकर और उत्तर मध्य विधायक अभिलाष पांडे को बयान जारी करना पड़ गया.

रत्नेश सोनकर ने कहा कि आशुतोष पांडे भाजपा में किसी भी पद पर नहीं है और ना ही संगठन ने उन्हें किसी तरह का दायित्व दिया है, जबकि विधायक डॉ अभिलाष पांडे ने कहा कि आशुतोष पांडे नामक व्यक्ति से मेरा कोई संबंध नहीं है, ऐसी जानकारी लगी है कि वह खुद को भाजपा का सोशल मीडिया प्रभारी बताता है, उन्होंने टी आई को आशुतोष पांडे को तत्काल गिरफ्तार करने के लिए कहा है. इस मामले में पुलिस जांच कर रही है. बहरहाल चर्चा है कि दोनों मामलों की जानकारी प्रदेश संगठन तक पहुंच गई है, वहां से क्या निर्देश होंगे इस पर कुछ कहा नहीं जा सकता, किंतु आम जनों के साथ विरोधी दल के नेता जानना चाह रहे हैं कि यदि दोनों ही मामलों में जब भाजपाई पदाधिकारियों की संलिप्तता ही नहीं है तो वरिष्ठों को सफाई देना ही क्यों पड़ रही है.. ?

अफसरों की जुगलबंदी, सरकारी खजाने पर भारी....

भ्रष्ट अफसरों की जुगलबंदी अंदर ही अंदर दीमक की तरह सरकार को किस तरह से खोखला कर रही है इसकी बानगी उस वक्त सामने आई जब शहडोल, डिंडोरी में भ्रष्टाचार के मामले उजागर हुए . सरकारी आयोजनों में कहीं एक लड्डू 120 रुपए में बांटा गया तो कहीं बिजली की दुकान से मिठाई, समोसा, नाश्ता खरीदा गया तो कहीं पर ड्राईफ्रूट के बिल के नाम पर सरकारी खजाने का बंटरबांट किया गया . शहडोल में पुताई के फर्जी बिल और सरकारी कार्यक्रम में अफसरों के 13 किलो काजू सहित अन्य ड्राईफ्रूट्स खाने के फर्जी बिलों का मामला उजागर हुआ फिर शहडोल के ब्यौहारी जनपद के शासकीय हाई स्कूल निपानिया में पुताई के काम ने और आग लगा दी . वजह पुताई के लिए स्कूल में केवल 4 लीटर पेंट का इस्तेमाल किया गया लेकिन कागजों में इसके लिए 168 मजदूर और 65 राजमिस्त्री दिखाए गए, इसके अतिरिक्त 1 लाख 6 हजार 984 रुपये का भुगतान भी कर दिया गया . डिंडोरी के समनापुर जनपद की अंडई ग्राम पंचायत में 10 बीड़ी के कट्टे के बंडलों का 3700 रुपए भुगतान कर दिया गया . इसके अलावा डिंडोरी में कार्यक्रम में वितरित किए गए लड्डुओं में भी अफसरों से अपने जेब भरे . नतीजा कागजों में एक लड्डू 120 रुपए का दिखाया गया, कुल 12 लड्डुओं के लिए यहां पर 1040 रुपए का बिल बनाकर पास करा लिया गया . अनूपपुर के ग्राम पंचायत बकेली में मेहमान नवाजी के लिए समोसे, चाय बुलवाई गई, पहले तो बिल 10 रुपए के एक समोसे के हिसाब से बना लेकिन बाद में उसी बिल में ओवरराइट करके एक समोसा 40 रुपए के हिसाब से कुल 60 समोसे के 2400 रुपए का बिल पास करा लिया गया .

व्यवधान के बिना बहस होना उचित

ऑपरेशन सिंदूर को लेकर संसद के दोनों सदनों में स्वस्थ बहस हुई और किसी प्रकार का व्यवधान, हंगामा, बहिर्गमन नहीं हुआ . यह संसदीय प्रणाली के प्रति पक्ष और विपक्ष दोनों को प्रतिबद्धता को दर्शाता है . ऑपरेशन सिंदूर रोके जाने के बाद से ही विपक्ष संसद का विशेष सत्र बुलाने की मांग करता आ रहा था, लेकिन इसे मंजूरी नहीं मिली . अब संसद को मानसून सत्र का एक सप्ताह से ज्यादा समय बीत जाने के बाद सरकार ने इस मुद्दे पर बहस के लिए तैयारी दर्शाई . सरकार ने ऑपरेशन सिंदूर को राष्ट्रवाद की विजय निरूपित किया . विपक्षी नेताओं ने अचानक संघर्ष विराम की घोषणा करने के मुद्दे पर सवाल उठाया और पहलगाम में 26 लोगों के नरसंहार के संदर्भ में सुरक्षा की कमी को लेकर सरकार को जवाबदार बताया . दोनों पक्षों के वरिष्ठ नेताओं ने बहस में भाग लेकर अपनी दलीलें रखीं . विपक्ष की यह शिकायत सरकार ने दूर की कि प्रधानमंत्री बहस का जवाब देने संसद में नहीं आते . पीएम मोदी, गृहमंत्री अमित शाह, रक्षामंत्री राजनाथ सिंह और विदेशमंत्री एस . जयशंकर ने सरकार का पक्ष मजबूती से रखा तो विपक्ष के नेताओं राहुल गांधी, मल्लिकार्जुन खड़गे, प्रियंका गांधी, पी . चिंदबरम, अखिलेश यादव, सुप्रिया सुले व कनिमोझी ने भी जोरदार तरीके से अपनी बात रखी . मुद्दा यह था कि अमेरिकी राष्ट्रपति ट्रंप बार-बार दावा करते हैं कि उन्होंने भारत-पाकिस्तान में सीजफायर करवाया तो सरकार उन्हें खुलकर झूठा करार क्यों नहीं देती ? जयशंकर ने कहा कि किसी तीसरे पक्ष का इसमें हस्तक्षेप नहीं था . राहुल गांधी ने कहा कि सरकार ने सेना के हाथ पीछे बांध दिए वरना हमारी सेना एक टाइगर है जिसे खुला छोड़ने की जरूरत है . उन्होंने याद दिलाया कि बांग्लादेश युद्ध के दौरान इंदिरा गांधी ने फील्ड मार्शल मानेकशा को पूरी छूट दी थी . प्रधानमंत्री मोदी ने आरोप लगाया कि कांग्रेस नेता पाकिस्तान की भाषा बोल रहे हैं . दुनिया को नए भारत से डरना होगा . दुनिया में किसी देश ने भारत को अपनी सुरक्षा में कार्रवाई करने से नहीं रोका . आगे चलकर इस सत्र में बिहार के मतदाता सूची पुनरीक्षण, उपराष्ट्रपति धनखड़ के इस्तीफे जैसे मुद्दों पर सदन में बहस हो सकती है . हंगामे की बजाय बहस करना हमेशा उपयुक्त है .

संपादकीय बोर्ड | प्रबंध संपादक : सुमीत माहेश्वरी, समूह संपादक : क्रांति चतुर्वेदी

निशानेबाज

छुट्टी हो जाएगी यदि करोगे मनमानी मंत्रियों को दी सख्त चेतावनी

पड़ोसी ने हमसे कहा, निशानेबाज, हर कॉर्पोरेटर सोचता है कि मैं विधायक बन जाऊं. इसी तरह विधायक भी मंत्री बनने का सपना देखता है. सपनों का कोई अंत नहीं है और सपना देखने के लिए पैसे भी नहीं लगते. किस्मत में लिखा हो तो ट्रंप जैसा बिल्डर भी राष्ट्रपति बन जाता है और मनमाने फैसले लेता है. सत्ता का पत्ता हाथ में आते ही नेता की चाल-ढाल बदल जाती है. कहावत है-कौआ चला हंस की चाल !

हमने कहा, आप कौए का उल्लेख क्यों कर रहे हैं ? क्या आपको फिल्म बॉबी का गाना याद आ गया-झूठ बोले कौआ काटे, काले कौए से डरियो. बात-बात में झूठ बोलने वाले नेता किसी भी कौए से नहीं डरते. जहां तक मंत्रियों के बेकाबू होने की बात है, उन्हें कंट्रोल में रखना मुख्यमंत्री का काम है. उन्हें समझाने बुझाने और सख्त चेतावनी देने की जिम्मेदारी सीएम और डिप्टी सीएम निभाते हैं. तांगा चलाने वाला भी तो अपने हंटर से घोड़े को काबू में रखता है.

पड़ोसी ने कहा, निशानेबाज, मंत्री को अपने आचरण का ध्यान रखना चाहिए. उसकी जरा सी चूक पार्टी और सरकार

की परेशानी बढ़ा सकती है. इसलिए उसे सजग रहना चाहिए. यदि कृषिमंत्री किसानों की आत्महत्या की गमी को भूलकर सदन में मोबाइल पर रमी खेले तो उसे अलर्ट रहना चाहिए कि कोई उसका वीडियो न बना ले. इसी प्रकार मंत्री को नोटों के ढेर के पास नहीं बैठना चाहिए. वह चाहे तो कचरे के ढेर के पास मजे से बैठ सकता है. महाराष्ट्र के मुख्यमंत्री देवेंद्र फडणवीस व उपमुख्यमंत्री अजीत पवार ने ऐसे मंत्रियों की क्लास ली और हड़काते हुए कहा कि अगली बार ऐसी गलती की तो उन्हें अपना पद खोना पड़ेगा.

हमने कहा, राजनीति की राह कांटों भरी है. कांटा बड़ा जहरीला होता है. पिछले दिनों शेफाली जरीवाला का निधन हो गया जो %कांटा लगा गर्ल% के नाम से फेमस थीं. उन पर गीत फिल्माया गया था- बंगले के पीछे, तेरी बेरी के नीचे, कांटा लगा.

पड़ोसी ने कहा, निशानेबाज, महाराष्ट्र में विलासराव देशमुख जैसे कुशल मुख्यमंत्री को पद इसलिए खोना पड़ा था क्योंकि 26/11 के आतंकी हमले के बाद जब वह होटल ताज का निरीक्षण करने पहुंचे तो उनके साथ उनका अभिनेता पुत्र रितेश देशमुख और उसका डायरेक्टर मित्र रामगोपाल वर्मा भी था. एक चूक हुई तो राजनीति की लुटिया डूबी !

शब्द-सागर : डॉ . सागर खादीवाला

CROSS WORD 11981 -डॉ. सागर खादीवाला

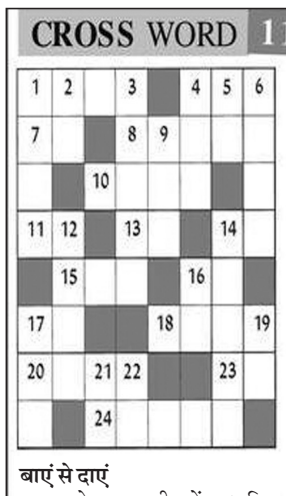

बाएं से दाएं

1. परमेश्वर, पुरी में स्थापित विष्णुमूर्ति 4. एक प्रकार का पौधा जिसके पत्ते एरंड के समान होते हैं और इसके फल खाने में स्वादिष्ट होते हैं 7. समझ, बुद्धि 8. बैंत-छड़ी आदि का एक तरफ से हिलाए जाने पर इधर-उधर झुकना, छुरी आदि का चमकना 10. किसी तरह पदार्थ या पानी का स्थिर होना जिससे मिट्टी या मैल नीचे बैठ जाए, पानी छन जाना 11. गुट, झुंड, गिरोह, फूल की पंखुड़ी, पौधे का पत्ता 13. सौ हजार 14. एक चौपाया जिसके शरीर पर लंबे कांटे होते हैं 15. ऐंठकर बात करना 16. उत्सव, अवसर, पुण्य काल 17. शंका, संदेह 18. गिनती में बारह का समूह 20. अन्न साफ करते समय निकलने वाली लकड़ी, कंकर आदि 23. प्रतिदिन, सदा, नित्य 24. तरुण, नौजवान

ऊपर से नीचे

1. ईरान के एक बादशाह जिसके पास कहते है एक ऐसा प्याला था जिसमें दुनिया में होने वाली बातें दिखाई देती थीं. 2. रफ्तार, हरकत, अवस्था, दशा 3. मोटाई के कारण शरीर के मांस का हिलना 4. पाला पोसा जाना 5. काठ या लोहे का बना एक बड़ा पात्र 6. अधिकारों का मनमाना उपयोग, स्वेच्छाचारिता 9. परीक्षा, गुण दोषों की ठीक जांच 12. किसी आधार के नीचे की, टंगना, किसी काम में देर होना 14. सब लोगों से संबंध रखने वाला 16. दूसरा, अन्य, पक्षी का पंख 17. शबर जाति की एक रामभक्त स्त्री 19. झुका हुआ, विनीत 21. जंगल 22. नया, नूतन

Solution 11980

अ	ति	■	आ	वा	रा	■	खा
मा	या	■	व	■	म	सा	न
न	■	सु	भ	द्रा	■	य	दा
वी	त	रा	ग	■	■	बा	नी
य	म	■	त	त्व	ज्ञा	न	■
■	स	त	■	रि	■	■	ओ
चा	■	बे	ह	त	र	■	जा
ह	वा	ला	त	■	ई	श्व	र

ज्योतिषाचार्य प्रियंका नारायणशंकर व्यास, कोतवाली बाजार, जबलपुर (म.प्र.)

आज जिनका जन्मदिन है

वर्ष के प्रारंभ में यात्रा का योग है, पारिवारिक दायित्वों की पूर्ति होगी, मित्र के कारण कार्यों में व्यवधान आयेगा, व्यवसाय में अत्याधिक परिश्रम करना होगा, वर्ष के मध्य में पूर्व निर्धारित कार्यो के रूकावटें आयेंगी, दाम्पत्य जीवन में कलहपूर्ण स्थिति से बचना चाहिये, वर्ष के अन्त में धन लाभ का योग है, शुभ सूचना प्राप्त होगी, जमीन जायजाद में वृद्धि होगी, संबंधों में मधुरता आयेगी.

मेष और वृश्चिक राशि के व्यक्तियों को धन लाभ का योग है, सुखद समाचार प्राप्त होगा, वृष और तुला राशि के व्यक्तियों को यात्रा का योग हे, पारिवारिक दायित्वों की पूर्ति होगी, कर्क राशि के व्यक्तियों को जीवन सुखमय रहेगा, सिंह राशि के व्यक्तियों को अधिक परिश्रम करना होगा, मिथुन और कन्या राशि के व्यक्तियों को मान सम्मान एवं प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी, मकर और कुंभ राशि के व्यक्तियों को निर्धारित कार्यों में रूकावटें आयेंगी, धनु और मीन राशि के व्यक्तियों को मित्र के कारण व्यवधान आ सकता है.

आज जन्मे शिशु का भविष्य

आज जन्म लिया बालक मिलनसार, सहानुभूतिपूर्ण हृदय का होगा. इनकी शिक्षा उत्तम रहेगी. ईश्वर भक्त होगा. ये बातचीत में प्रवीण और व्यवहार कुशल तथा समझदार होते हैं. जन्म स्थान से दूर इनकी उन्नति होगी.

उदयकालीन ग्रह चाल

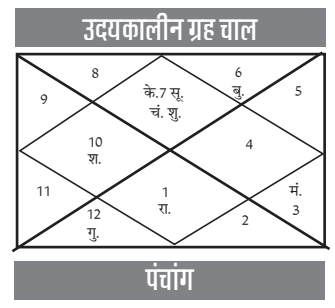

पंचांग

रा.मि. 11 संवत् 2082 श्रावण शुक्ल अष्टमीं शनिवासरे प्रातः 5/57, विशाखा नक्षत्रे दिन-रात, शुभ योगे प्रातः 6/24, वव करणे सू.उ. 5/25 सू.अ. 6/35, चन्द्रचार तुला रात 11/35 से वृश्चिक, शु.रा. 7, 9, 10, 1, 2, 5 अ.रा. 8, 11, 12, 3, 4, 6 शुभांक- 9, 2, 6.

व्यापार भविष्य

श्रावण शुक्ल अष्टमीं को विशाखा नक्षत्र के प्रभाव से रूई, चांदी के भाव में तेजी होगी. गुड, खांड, लालमिर्च, सरसों के भाव में उछाल आयेगा. शेष वस्तुओं के भाव कल की चाल पर चलेंगे. बादाम, मीन, पिस्ता, छुहारा में मंदी की चाल चलेगी. भाग्यांक 2789 है.

मेष- मधुर व्यवहार से सबका दिल जीत लेंगे. मित्र मिलेगें. अनावश्यक कार्यों में धन खर्च होगा. परिश्रम की अधिकता रहेगी. साहस पराक्रम में वृद्धि होगी.

वृषभ- दिमाग की बजाय दिल से काम लें. आर्थिक समस्याओं का सरलता से समाधान होगा. प्रयत्न सार्थक होंगे. आय के एक से अधिक साधन प्राप्त होंगे.

मिथुन- विवादास्पद मामले बातचीत से सुलझा लेंगे. मेहमानों की आवाजाही से तय कार्यक्रम बदलना पड़ेगा. निजी पुरूषार्थ बना रहेगा. आरोग्य सुख उत्तम रहेगा.

कर्क- वाकचातुर्य से बिगड़ी बात बना लेंगे. भाग्यवर्धक प्रयासों में सफलता मिलेगी. अधिक श्रम करना पड़ेगा. सामाजिक कार्यों की रूपरेखा पर विचार हो सकता है.

सिंह- धार्मिक यात्रा हो सकती है. अटका धन मिलने की उम्मीद है. सोचे हुये कार्यों में विलंब होगा. यश और मान-सम्मान की प्राप्ति होगी. निजी दायित्वों की पूर्ति का योग है.

कन्या- कारोबारी यात्रा लाभदायी रहेगी. युवाओं को इच्छित नौकरी मिलेगी. मित्रता आपके लिये उपयोगी रहेगी. नवीन मित्रों का समागम होगा. यश प्राप्त होगा.

तुला- विलासिता के सामान पर खर्च करेंगे. आवेश में आने से बात बिगड़ सकती है. व्यवसायिक कार्यों में वृद्धि होगी. सामाजिक कार्यों में व्यस्तता रहेगी. सम्मान मिलेगा.

वृश्चिक- बुजुर्गों के स्वास्थ्य का ध्यान रखें. कानूनी मामलों से दूर रहें. पठन पाठन में रूचि रहेगी. संबंधों का विकास होगा. रचनात्मक कार्यों की प्राप्ति होगी.

धनु- दाम्पत्य सुख मिलेगा. निजी कार्यों को टालने से बात बिगड़ेगी. घर के किसी सदस्य की अस्वस्थ्यता से चिंता होगी. प्रयास में बाधा आने का योग है.

मकर- रिश्तों में मधुरता बढ़ेगी. स्वास्थ्य पर ध्यान दें. परोपकारी कार्यों में यश मिलेगा. नौकरी में अधिनस्थों का उचित सहयोग एवं मार्गदर्शन प्राप्त होगा.

कुम्भ- कारोबार फायदे के लिये समझौता करना पड़ेगा. मित्रों कुटुम्बियों के सहयोग से पारिवारिक दायित्वों की पूर्ति होगी. आर्थिक प्रयास सफल एवं सार्थक होगा.

मीन- विवादास्पद मामले सुलझने से राहत मिलेगी. प्रियजन से मुलाकात सुखद रहेगी. समय पर सोचे हुये कार्यों के बनने से हर्ष होगा. आर्थिक कष्ट दूर होगा.

SUDOKU 7113

8	2			6			1	
	6		8	9			7	5
3			1					2
	3		4				6	
6		2		1		4		3
	8				5		2	
2					3			1
5	1			7	6		4	
	9			4			3	6

■ प्रत्येक पंक्ति में 1 से 9 तक के अंक भरे जाने आवश्यक है. इनका क्रमवार होना आवश्यक नहीं है. आड़ी और खड़ी पंक्ति में एवं 333 के वर्ग में किसी भी अंक की पुनरावृत्ति न हो इसका विशेष ध्यान रखें. ■ पहले से मौजूद अंकों को आप हटा नहीं सकते. ■ पहेली का केवल एक ही हल है.

नवभारत सू-दोकू 7112

8	6	4	2	7	9	5	3	1
7	3	9	1	8	5	2	6	4
1	5	2	4	3	6	7	9	8
4	1	3	8	6	7	9	5	2
5	8	6	9	2	4	3	1	7
2	9	7	5	1	3	8	4	6
9	4	8	7	5	1	6	2	3
3	7	5	6	4	2	1	8	9
6	2	1	3	9	8	4	7	5